

BANARAS HINDU UNIVERSITY

The Banaras Hindu University, founded by Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya Ji in 1916 is the first truly residential Indian University established on the pattern of the universities at Nalanda and Taxila. The Banaras Hindu University (BHU), is not only one of the most prestigious Central Universities in the country, but is also the largest residential University in Asia. The scheme for the establishment of Banaras Hindu University was formulated in consultation with eminent freedom fighters and nationalists like Gopal Krishna Gokhale and Surendra Nath Banerjee and had the support of prominent educationists and other representatives from all over the country.

The confluence of oriental and theological learning with liberal arts, science and engineering, Ayurveda and modern systems of medicine and agriculture made BHU a unique Capital of Knowledge where East met West. The excellent infrastructural facilities, many of which were ahead of times for India, model campus life and the magnetic personality of Pt. Malaviyajji made BHU the most favored destination for the talented students and learned faculty from all parts of the country. Although designated as 'The Banaras Hindu University', the National University has all along been a truly national institution open to persons of all classes, castes, creeds, and of both sexes without any discrimination whatsoever.

The holistic model of education, conceived and enriched by its illustrious founder, Mahamana Pandit Madan Mohan Malaviya Ji, offers refreshing new perspectives to young minds and facilitates the accomplishment of their creative talents. Its contribution in extending the frontiers of knowledge in critical areas and also in the regeneration of the community values is well manifested throughout the world with its alumni occupying key positions in varied professional domains.

The university has produced a galaxy of alumni in all walks of life who have been leaders in the national movement, in nation building after independence and in establishing its infrastructure through major industries such as steel, coal, minerals, energy, railways and water reservoirs/dams etc. This also includes developing institutions like the IIT's, the IIMs, health education universities and agriculture universities/institutions.

Its alumni have been Vice-President of India, Prime Ministers, Chief Justice of Supreme Court, Members of Parliament, holders of Bharat Ratna, Fellows of Royal Asiatic Society and numerous other bodies and organizations all over the country.

The University is located on the western bank of holy river Ganga. It is spread over an area of 15 square kilometers with majestic buildings of great architectural delight. The University

has 134 independent teaching departments, many of them recognized as Centres of Excellence, 2 interdisciplinary schools, 16 Faculties, one constituent college, 5 Institutes and 12 Centres of Studies with the unique distinction of having all in the same walled campus. The campus has a unique special attraction in Bharat Kala Bhawan, a treasure house of artifacts.

The University also runs three schools and one Ranveer Sanskrit Pathshala imparting education from primary to secondary level apart from having a Kendriya Vidyalaya housed in the Campus. In addition, the Rajiv Gandhi South Campus has been established in the year 2006 in a sprawling campus of 1092.6 Hectares (2700 Acres) located about 75 kms away from the main campus, at Barkachha in Mirzapur district, Uttar Pradesh.

The Indian Institute of Technology (BHU) is located in the campus of the Banaras Hindu University. Earlier it was also a part of the BHU corpus.

The University has its own telecommunication setup, Press, Computer network system, Dairy, Agricultural farms, museum of arts and culture of international repute – 'Bharat Kala Bhawan', Swimming Pool, Guest House Complex, Hostels for boys and girls, residential quarters for faculty and staff, auditoriums including the main 'Swatantrata Bhawan' with nearly 2000 seats and modern facilities, Central Library having more than one million volumes, Health Centres, 1000 bedded modern Hospital, the biggest Trauma Centre & Superspeciality Hospital of the country, Indoor and Outdoor stadium, Gymnasium, the famous Lord Vishwanath Temple, Air/Naval/Infantry NCC wings, NSS & Mountaineering Centre, Public Relations and Publication Units, Employment Guidance and Information Bureau, Training and Placement Centres, Hobby Centre, Cafeteria, Banks and Post-Offices, a Telegraphy Office, Shopping Centre, Airfield and Helipad, Electric, Water & Works Departments and its own security arrangement for law and order. It is one of a handful of Indian universities with undergraduate and postgraduate education as well as research, all in one campus.

The Banaras Hindu University has attained its Hundred Years on 'Vasantpanchami' 12th February, 2016. It has been a great journey for this prime institution of learning well known as 'Capital of Knowledge'.

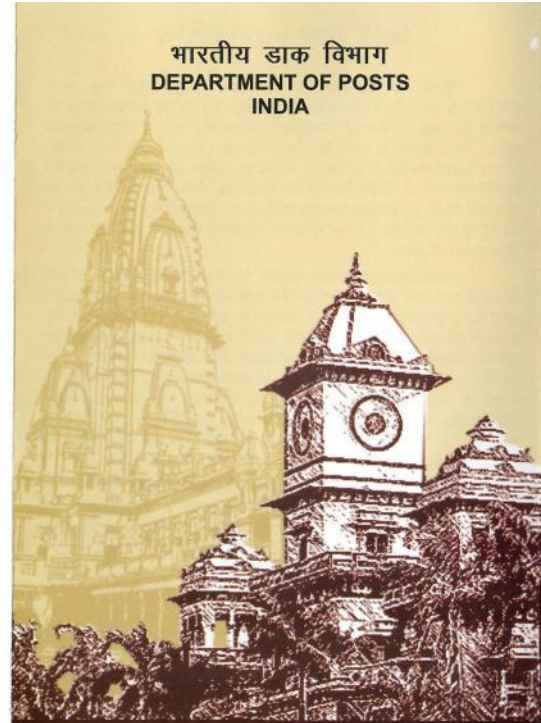
Department of Posts is pleased to release a set of two Commemorative Postage Stamps on Banaras Hindu University.

Credits:-

Text : Based on the material received from the Proponent

Stamp / FDC/Brochure : Shri Brahm Prakash
Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY

विवरणिका
BROCHURE

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा 1916 में की गई। नालंदा तथा तक्षशिला जैसे सुप्रसिद्ध विश्वविद्यालयों की संरचना के आधार पर बना यह विश्वविद्यालय वास्तविक अर्थों में पहला आवासीय भारतीय विश्वविद्यालय है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय न केवल देश के सबसे प्रतिष्ठित केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में से एक है, बल्कि यह एशिया का विशालतम आवासीय विश्वविद्यालय भी है। इसकी स्थापना की परिकल्पना गोपाल कृष्ण गोखले तथा श्री सुरेंद्र नाथ बनर्जी जैसे विख्यात स्वतंत्रता सेनानियों तथा राष्ट्रवादी नेताओं के परामर्श से की गई थी और इस दिशा में देशभर के प्रख्यात शिक्षाविदों तथा अन्य प्रतिनिधियों का भी पूरा समर्थन प्राप्त हुआ।

कला, विज्ञान, इंजीनियरी, आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान तथा कृषि विज्ञान के साथ-साथ प्राच्य और धर्म शास्त्रीय शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था होने के कारण, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) विद्यार्जन के ऐसे अनूठे केन्द्र के रूप में उभरा, जहाँ ज्ञान की पूर्वा धारा का संगम परिचामी धारा से हुआ। यहाँ उपलब्ध श्रेष्ठ बुनियादी सुविधाएँ, विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों की आदर्श जीवन शैली और पंडित मदन मोहन मालवीय के मोहक व्यक्तित्व ने बीएचयू में ऐसे अनूठे वातावरण का निर्माण किया कि देशभर के मेधावी छात्र और ज्ञानी शिक्षकगण यहाँ खिंचे चले आए। इस राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का नाम 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' अवश्य है, परंतु यह हमेशा से सही मायनों में राष्ट्रीय संस्थान रहा है, जिसने वर्ग, जाति, धर्म और महिला-पुरुष का भेदभाव किए बिना सभी शिक्षार्थियों का सदैव खुले मन से स्वागत किया है।

बीएचयू में इसके संस्थापक, पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा संकल्पित और सुपोषित सर्वांगीण शिक्षा की शैली को अपनाया जाता है, जिसके अंतर्गत युवा विद्यार्थियों को नई विचार दृष्टि प्रदान करने और उनकी रचनाशीलता को सुविकसित करने का प्रयास किया जाता है। ज्ञान और प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण क्षेत्रों तथा सामुदायिक मूल्यों को बढ़ावा देने के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय के योगदान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया गया है। यहाँ के छात्र विभिन्न प्रकार के कार्य क्षेत्रों में शीर्षस्थ पदों पर कार्यरत हैं।

इस विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त छात्रों ने जनजीवन के विविध क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त की है। इस फेहरिस्त में राष्ट्रीय आंदोलन के महान नेताओं से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्र निर्माण करने वाले महापुरुषों और इस्पात, कोयला, खनिज, ऊर्जा, रेलवे तथा जलाशय/बाँध निर्माण आदि जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहते हुए देश की बुनियादी संरचना को आकार देने वालों के नाम शामिल हैं। इस सूची में वे लोग शामिल रहें हैं, जिन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), स्वास्थ्य शिक्षा से जुड़े विश्वविद्यालयों तथा कृषि विश्वविद्यालयों जैसे महत्वपूर्ण संस्थानों के विकास को संभव बनाया है।

इस विश्वविद्यालय के यशस्वी पूर्व छात्रों ने भारत के उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश तथा संसद सदस्यों के पद की शोभा बढ़ाई है और इनमें वे महानुभाव भी शामिल हैं, जिन्हें भारत रत्न जैसे सम्मान से अलंकृत किया गया है तथा जो रॉयल एशियाटिक सोसाइटी जैसी विशिष्ट संस्थाओं के फेलो रहे हैं।

यह विश्वविद्यालय पावन-पुनीत गंगा के परिचामी तट पर स्थित है। 15 वर्ग कि. मी. क्षेत्र में फैला इसका परिसर ऐसी भव्य इमारतों से सजा है, जो वास्तुकला को अद्भुत मिसालें पेश करती हैं। इस विश्वविद्यालय के अंतर्गत 134 स्वतंत्र शिक्षण विभाग हैं। इनमें से अनेक विभागों को सर्वोत्कृष्ट शिक्षा केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। इनके

साथ-साथ यहाँ 2 अंतर्विषयक केन्द्र, 16 संकाय, 1 संबद्ध कॉलेज, 5 संस्थान तथा 12 अध्ययन केन्द्र भी स्थित हैं और सबसे अनूठी बात यह है कि ये सभी शिक्षण केन्द्र इस विश्वविद्यालय के एक ही परिसर के दायरे में स्थित हैं। इस परिसर में विशिष्ट आकर्षण का केन्द्र यहाँ का भारत कला भवन है, जिसमें कलात्मक वस्तुओं का बेशकीमती खजाना मौजूद है।

यह विश्वविद्यालय तीन सामान्य स्कुल और एक विशेष रणवीर संस्कृत पाठशाला भी संचालित करता है। इनके जरिए प्राथमिक से माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके साथ-साथ विश्वविद्यालय के परिसर में एक केन्द्रीय विद्यालय भी स्थित है। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2006 में इस विश्वविद्यालय का दक्षिणी परिसर भी स्थापित किया गया है, जिसका नाम राजीव गांधी दक्षिणी परिसर रखा गया है। 1092.6 हेक्टेयर क्षेत्र (2700 एकड़) में फैला यह परिसर विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर से 75 कि. मी. दूर उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के बड़कच्चा इलाके में स्थित है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के परिसर में ही भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी-बीएचयू) भी स्थित है। पहले यह भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का ही हिस्सा था।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का अपना ही दूरसंचार तंत्र है। साथ ही, इस विश्वविद्यालय की अपनी प्रेस, कम्प्यूटर नेटवर्क प्रणाली, डेयरी, कृषि फार्म तथा 'भारत कला भवन' के नाम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात कला एवं संस्कृति संग्रहालय भी है। इसके अतिरिक्त, यहाँ स्विमिंग पूल, गेस्ट हाउस परिसर, छात्र-छात्राओं के लिए हॉस्टल, शिक्षकगण तथा यहाँ कार्य करने वाले कार्मिकों के लिए आवासीय भवन और कई सभागार भी मौजूद हैं, जिनमें सबसे बड़ा है 'स्वतंत्रता भवन', जो समस्त आधुनिक सुविधाओं से युक्त है और 2000 से अधिक सीटों वाला है। इसके साथ-साथ इस विश्वविद्यालय का अपना केन्द्रीय पुस्तकालय भी है, जो दस लाख से अधिक पुस्तकों से सुसज्जित है। इसके अलावा, यहाँ अनेक स्वास्थ्य केन्द्र, अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से संपन्न 1000 बिस्तरों वाला अस्पताल, देश का विशालतम टॉमा सेंटर तथा सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल, इंडोर और आउटडोर खेलों के लिए स्टेडियम, जिम्नेसियम, भगवान विश्वनाथ का प्रसिद्ध मंदिर, एनसीसी के वायु सेना/नौसेना, इफेट्री विंग, एनएसएस और पर्वतारोहण केन्द्र, जनसंपर्क एवं प्रकाशन इकाइयाँ, रोजगार परामर्श तथा सूचना ब्यूरो, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट केन्द्र, छात्रों की विविध रुचियों को प्रोत्साहित करने के लिए हॉबी केन्द्र, कैफेटेरिया, बैंक और डाकघर, टेलीग्राफ ऑफिस, शापिंग सेंटर, हवाईपट्टी तथा हेलीपैड और बिजली-पानी तथा अन्य सिविल कार्यों के विभाग तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपनी सुरक्षा व्यवस्था मौजूद है। यह विश्वविद्यालय उन चुनिंदा भारतीय विश्वविद्यालयों में से एक है, जिनमें एक ही परिसर में स्नातक तथा स्नातकोत्तर की शिक्षा के साथ-साथ अनुसंधान कार्य की सुविधा भी उपलब्ध है।

12 फरवरी, 2016 को 'बसंत पंचमी' के दिन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के 100 शानदार वर्ष पूरे कर लिए हैं। सर्वोत्कृष्ट ज्ञानार्जन के इस महान संस्थान की अब तक की कीर्ति यात्रा वास्तव में वैभवशाली रही है।

डाक विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पर दो स्मारक डाक-टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आधार:-

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्री ब्रह्म प्रकाश
विवरणिका/विरूपण मुहर



तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा, 1500 पैसा
Denomination	:	500 p, 1500 p
मुद्रित डाक टिकट	:	3.60 लाख
Stamps Printed	:	3.60 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00